Chapter G

Tendencies and patterns of behaviors

(Bhavanugam)

Behaviors tendencies in thoughts, words and actions relate to the quality of perceptions. Just as one day does not make a trend, quality of being is not judged from its occasional behaviors.

Tendencies and predispositions (*bhav*) relate to the quality of perceptions. Such patterns of behaviors (thought, words and actions) and ambiguities (*vikalp)* are meaningful indicators of balance and potential. Gradient of qualitative change show up in attitude, demeanor, reaction, aggression, and response that mirror perceptions that populate alternatives of the semiconscious states. Thus trends and patterns reflect deeper hierarchy of the way an organism sees and interprets the world.

Insights gained from trends include:

* All matter has common components (elements, parts, ingredients).
* Mnemonic forces of symbols are part of the relation between words and languages. We can count the universe with few digits, for example by using symbolic logic of the ten digits (0 to 9) in the decimal system, or just with 0 and 1 in the binary algebra.
* Taxonomy of all flora and fauna ultimately relates to their genetic basis, and ultimately to their evolution from common ancestors.
* The Periodic Table of elements ultimately relates to the subatomic architectures.

* All organisms tend to recognize and optimize their actions and responses through perceived gradients of pain, food, danger, opportunity posed by happening in the external world.

This chapter places emphasis on *sammat* (balance and rational consistency) to recognize meaningful trends. Identified behavior tendencies are:

Aupshamic tendencies make up superficial behaviors (manners).

Khayik tendencies shadow the existence. Such under the surface tendencies are the beginning of rational consistency and consistent rationality for consistency between thoughts, words and actions.

Parinamic is best translated as the tendency with identifiable motive.

Audyik are the cultural tendencies as innate social, biological and natural tendencies of a group (category, class, and sexuality).

*****

भावाणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

भावानुगमद्वारकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेश-निर्देश ॥ १ ॥

#G1. Operationally, the criterion of tendency (***bhav***, trend in pattern of thought, attitude, behavior and associated features as in demeanor, reaction, aggression) of perception is considered (***anugam***) for the class in general and also for individuals.

*****

General tendencies in relation to the State (G2-9)

ओघेण मिच्छादिट्ठि त्ति को भावो, ओदइओ भावो ॥ २ ॥

सासणसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, पारिणामिओ भावो ॥ ३ ॥

सम्मामिच्छादिट्ठि त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो ॥ ४ ॥

असंजदसम्माइट्ठि त्ति को भावो, उवसमिओ वा खइओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ ५ ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ६ ॥

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो ॥ ७ ॥

चदुण्हमुवसमा त्ति को भावो, ओवसमिओ भावो ॥ ८ ॥

चदुण्हं खवा सजोगिकेवली अजोगिकेवलि त्ति को भावो, खइओ भावो ॥ ९ ॥

ओघनिर्देशकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि यह कौनसा भाव है ? औदयिक भाव है ॥ २ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? पारिणामिक भाव है ॥ ३ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि यह कौनसा भाव है ? क्षायोपशमिक भाव है ॥ ४ ॥

असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? औपशमिक भाव भी है, क्षायिक भाव भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥ ५ ॥

किन्तु असंयतसम्यग्दृष्टिका असंयतत्व औदयिकभावसे है ॥ ६ ॥

संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत, यह कौनसा भाव है ? क्षायोपशमिक भाव है ॥ ७ ॥

अपूर्वकरण आदि चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक यह कौनसा भाव है ? औपशमिक भाव है ॥ ८ ॥

चारों क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, यह कौनसा भाव है ? क्षायिक भाव है ॥ ९ ॥

#G2. What is the belligerence and aggression tendency (*bhav*) of those in State I? It is innate (***Audyik***).

#G3. What is the tendency of those in State II? It depends on their mood. It is generally of deliberate thought and expectation (***Parinamic***).

#G4. What is the tendency of those in State III? It is of reaction that interrupts subdued and timid background with abrupt change of intentions (***chhayopsamic***, ***chaovsamio***, or chaotic).

#G5. What is the tendency in State IV? Changeable and generally unpredictable (random to chaotic, and even rational at times),

#G6. and they show reaction and aggression if uncontrolled.

#G7. What is the tendency of those in States V, VI or VII? They have chaotic (***chhayopsamic***) tendency.

#G8. What is the tendency of those committed to States VIII, IX, X or XI? Rational consistency interrupted with chaotic or random episodes (***Aupshamic***).

#G9. What is the tendency of those dedicated to States VIII, IX, X or XI, and the kevali? They are rationally consistent (***khayik***) with celerity and serenity that reflects consideration and understanding.

*****

In relation to niray (G10-18)

आदेसेण गइयाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु मिच्छादिट्ठि त्ति को भावो, ओदइओ भावो ॥ १० ॥

सासणसम्माइट्ठि त्ति को भावो, पारिणामिओ भावो ॥ ११ ॥

सम्मामिच्छादिट्ठि त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो ॥ १२ ॥

असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, उवसमिओ वा, खइओ वा, खओवसमिओ वा भावो ॥ १३ ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ १४ ॥

एवं पढमाए पुढवीए णेरइयाणं ॥ १५ ॥

विदियाए जाव सत्तमीए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमोघं ॥ १६ ॥

असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, उवसमिओ वा खओव-समिओ वा भावो ॥ १७ ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ १८ ॥

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि यह कौनसा भाव है ? औदयिक भाव है ॥ १० ॥

नारकी सासादनसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है? पारिणामिक भाव है ॥ ११ ॥

नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि यह कौनसा भाव है? क्षायोपशमिक भाव है ॥ १२ ॥

नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? औपशमिक भाव भी है, क्षायिक-भाव भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥ १३ ॥

किन्तु नारकी असंयतसम्यग्दृष्टिका असंयतत्व औदयिक भावसे है ॥ १४ ॥

इस प्रकार प्रथम पृथिवीमें नारकियोंके सर्व गुणस्थानोंसम्बन्धी भाव होते हैं ॥ १५ ॥

द्वितीय पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक नारकोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके भाव ओघके समान हैं ॥ १६ ॥

उक्त नारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? औपशमिक भाव भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥ १७ ॥

किन्तु उक्त नारकी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका असंयतत्व औदयिक भावसे है ॥ १८ ॥

#G10. In general what is the tendency of *niray* in State I? Unpredictable belligerence and random aggression.

#G11. What is the tendency of *niray* in State II? Deliberate action and unpredictable reaction (G3).

#G12. What is the tendency of *niray* in State III? Generally abrupt with changeable intentions (G4)

#G13. What is the tendency of *niray* in State IV? They are changeable and unpredictable with random actions interrupted with chaotic and rational consistency (G5),

#G14. and they also show reaction and aggression if uncontrolled.

#G15. These (G11-14) are also the tendencies of *niray* of the first under-world.

#G16. Tendencies of *niray* in the second to seventh underworlds follow from the generalization for the States I, II or III.

#G17. Tendencies of such (G16) *niray* in State IV also follow from generalization for the State.

#G18. However, belligerence with lack of restraint is innate in *niray* in State IV.

*****

In relation to the tirikkh (G19-21)

तिरिक्खगदीए तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदाणमोघं ॥ १९ ॥

णवरि विसेसो, पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु असंजदसम्मादिट्ठित्ति को भावो, ओवसमिओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ २० ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ २१ ॥

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंच योनिमतियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ १९ ॥

विशेष बात यह है कि पंचेन्द्रियतिर्यंच योनिमतियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? औपशमिक भाव भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥ २० ॥

किन्तु तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टियोंका असंयतत्व औदयिकभावसे है ॥ २१ ॥

#G19. Tendencies of independent five-sensed sexually differentiated *tirikkh* in States I through V follow from generalization for their State.

#G20. In particular, what is the tendency of the five-sensed sexually differentiated *tirikkh*? They exhibit belligerence with random and chaotic reactions (G3 and G4).

#G21. *Tirikkh* in State IV show aggression, if unrestrained.

*****

In relation to the human (G22)

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ २२ ॥

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ २२ ॥

#G22. Tendencies of humans in States I through XIV follow from the generalization for their state.

*****

In relation to Dev (G23-29)

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघं ॥ २३ ॥

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवा देवीओ सोधम्मीसाणकप्प-वासियदेवीओ च मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ २४ ॥

असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, उवसमिओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ २५ ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ २६ ॥

सोधम्मीसाणप्पहुडि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघं ॥ २७ ॥

अणुदिसादि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, ओवसमिओ वा खइओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ २८ ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ २९ ॥

देवगतिमें देवोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक भाव ओघके समान हैं ॥ २३ ॥

भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देव एवं देवियां, तथा सौधर्म ईशान कल्पवासी देवियां, इनके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि ये भाव ओघके समान हैं ॥ २४ ॥

असंयतसम्यग्दृष्टि उक्त देव और देवियोंके कौनसा भाव है ? औपशमिक भाव भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥ २५ ॥

किन्तु उक्त असंयतसम्यग्दृष्टि देव और देवियोंका असंयतत्व औदयिक भावसे है॥ २६ ॥

सौधर्म-ईशानकल्पसे लेकर नव ग्रैवेयक पर्यंत विमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ २७ ॥

अनुदिश आदिसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक विमानवासी देवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? औपशमिक भी है, क्षायिक भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥ २८ ॥

किन्तु उक्त असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका असंयतत्व औदयिकभावसे है ॥ २९ ॥

#G23. Tendencies of *dev* in States I, II, III or IV follow from the generalization for their state (G2-4).

#G24. Tendencies of the various subclasses of *dev* in States I, II or III also follow from the generalization for their state.

#G25. What is the tendency of *dev* in State IV? It is of random aggression.

#G26. Aggression and belligerence among *dev* is due to lack of restraint.

#G27. Tendency of the imagined and celestial *dev* in State IV follows from the generalization for the State.

#G28. What is the tendency of *dev* of the nine directions and the celestial reaches? They exhibit varying degrees of rational consistency (G7 and G4).

#G29. Lack of restraint of *dev* is due to aggression and belligerence.

*****

In relation to the senses (G30)

इंदियाणुवादेण पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३० ॥

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ३० ॥

#G30. Operationally, tendencies of the five sensed independent beings in States I through XIV follow from the generalization for their state (G2-9).

*****

In relation to the body form (G31)

कायाणुवादेण तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३१ ॥

कायमार्गणाके अनुवादसे त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तकोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ३१ ॥

#G31. Tendencies of independent crawlers in States I through XIV follow from the generalization for their state (G2-9).

*****

In relation to the ability to communicate (G32-40)

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३२ ॥

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं ओघं ॥ ३३ ॥

असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, खइओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ ३४ ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ३५ ॥

सजोगिकेवलि त्ति को भावो, खइओ भावो ॥ ३६ ॥

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघभंगो ॥ ३७ ॥

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ३८ ॥

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो ॥ ३९ ॥

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी सजोगिकेवली ओघं ॥ ४० ॥

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी, काययोगी और औदारिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ३२ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंके भाव ओघके समान हैं ॥ ३३ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? क्षायिक भाव भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥ ३४ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टिका असंयतत्व औदयिक भावसे है ॥ ३५ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली यह कौनसा भाव है ? क्षायिक भाव है॥ ३६ ॥

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ३७ ॥

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि ये भाव ओघके समान हैं ॥ ३८ ॥

आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत यह कौनसा भाव है ? क्षायोपशमिक भाव है ॥ ३९ ॥

कार्मणकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये भाव ओघके समान हैं ॥ ४० ॥

#G32. Tendencies during communication through expression, word, and body form follow from the generalization for their States I through XIV (G2-9).

#G33. Tendency of those in States I or II during communication through gross changes in the body form follows from the generalization for their state.

#G34. What is the tendency of those in State IV? Their tendency during communication is chaotic and changeable (G3 and G4),

#G35. and they show aggression and reaction if uncontrolled.

#G36. What is the tendency of *Sajogkevali* during communication? It is of consistent rationality.

#G37. Tendency for those in States I through IV during communication through body form follows from the generalization for their state (G3-5).

#G38. Tendency of those in States I, II or IV during communication with body form combined with other modes follows from the generalization for the state.

#G39. What is the tendency of those in States VI during communication with changes in internal body form alone or combined with other modes? It is chaotic and changeable (possibly in reference to underlying tension).

#G40. Tendency of those in States I, III, IV or XIII during communication through the transitional action-body form follows from the generalization for their state.

*****

In relation to the pain and pleasure response (G41-42)

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेद-णउंसयवेदएसु मिच्छादिट्ठि-प्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ ४१ ॥

अवगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ४२ ॥

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ४१ ॥

अपगतवेदियोंमें अनिवृत्तिकरणसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ४२ ॥

#G41. Operationally, tendency to express pain and pleasure response follows from the generalization for their states I through X.

#G42. Lack of such tendencies among those in States XI through XIV follows from the generalization for their state.

*****

In relation to the passions (G43-44)

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा ओघं ॥४३॥

अकसाईसु चदुट्ठाणी ओघं ॥ ४४ ॥

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्पराय उपशामक और क्षपक गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ४३ ॥

अकषायी जीवोंमें उपशान्तकषाय आदि चारों गुणस्थानवर्ती भाव ओघके समान हैं । ४४ ॥

#G43. Operationally, tendency to express passions (anger, pride, illusion, and greed) follows from the generalization for their state I through X.

#G44. Lack of such tendency among the others follows from the generalization for their state XI through XIV.

*****

In relation to the ability to understand (G45-48)

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ४५ ॥

आभिणिबोहिय-सुद-ओधिणाणीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ ४६ ॥

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ ४७ ॥

केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओघं ॥ ४८ ॥

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि भाव ओघके समान हैं ॥ ४५ ॥

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ४६ ॥

मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ४७ ॥

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली भाव ओघके समान है ॥ ४८ ॥

#G45. Operationally, those in States I, II or III lack innate ability to understand, and partially cognize what they hear. As a generalization for the State this results in belligerent tendency and unpredictable reaction.

#G46. Those in States IV through XII understand from expression, words and intent. They are less chaotic and more considerate.

#G47. Those in States VI through XII understand implications. They tend to be less chaotic and more understanding of the needs of others.

#G48. Those in States XIII and XIV with valid and total knowledge are consistently rational.

*****

In relation to the restraints (G48-55)

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ४९ ॥

सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ ५० ॥

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अप्पमत्तसंजदा ओघं ॥ ५१ ॥

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइया उवसमा खवा ओघं ॥ ५२ ॥

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चदुट्ठाणी ओघं ॥ ५३ ॥

संजदासंजदा ओघं ॥ ५४ ॥

असंजदेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघं ॥ ५५ ॥

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें प्रमत्तसंयतसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ४९ ॥

सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयतसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ५० ॥

परिहारशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये भाव ओघके समान हैं ॥ ५१ ॥

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसाम्परायिक उपशामक और क्षपक भाव ओघकेसमान हैं ॥ ५२ ॥

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंमें उपशान्तकषाय आदि चारों गुणस्थानवर्ती भाव ओघके समान हैं ॥ ५३ ॥

संयतासंयत भाव ओघके समान है ॥ ५४ ॥

असंयतोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ५५ ॥

#G49. Operationally, tendencies for restraint follow from generalization for their state V through XIV.

#G50. Less chaotic tendencies with careful attention to restraints on time commitments follow from the generalization for their state VI through IX.

#G51. Chaotic tendencies during the exercise of restraints on behavior follow from the generalization for their state VI or VII (where restraints on actions are not yet integrated with thought and words).

#G52. Those in State X with minor passions tend to be consistently rational, considerate, calm and unperturbed.

#G53. Those in States XI through XIV with total restraints on behavior tend to be consistently rational.

#G54. Those in State V with occasional and chaotic consistency tend to be changeable in their attention, thoughts, responses and actions.

#G55. Random and chaotic unrestrained tendencies follow from the generalization for their state I through IV.

*****

In relation to the ability to recognize pattern (G56-58)

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ ५६ ॥

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ ५७ ॥

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ ५८ ॥

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ५६ ॥

अवधिदर्शनी जीवोंके भाव अवधिज्ञानियोंके भावोंके समान हैं ॥ ५७ ॥
केवलदर्शनी जीवोंके भाव केवलज्ञानियोंके भावोंके समान हैं ॥ ५८ ॥

#G56. Operationally, tendencies of those in States I through XII follow from the patterns they cognize and perceive.

#G57. Those who cognize and know limits (intentions and implications) tend to have consistent perception, and show understanding and care in their dealings.

#G58. Those who cognize complete and valid pattern have rational and complete perception and understanding and are consistently rational.

*****

In relation to the motives (G59-61)

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु चदु-ट्ठाणी ओघं ॥ ५९ ॥

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्त-संजदा त्ति ओघं ॥ ६० ॥

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ६१ ॥

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या वालोंमें आदिके चार गुणस्थानवर्ती भाव ओघके समान हैं ॥ ५९ ॥

तेजोलेश्या और पद्मलेश्या वालोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ६० ॥

शुक्ललेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ६१ ॥

#G59. Operationally, reaction and aggression of those in States I through IV follows from their darker, unclear and hidden motives.

#G60. Changeable and chaotic tendencies of those in States I through VII follow from their bright and colored motives.

#G61. Subdued, calm and serene tendencies with rational consistency among those in States I through XIII follow from their white motives.

*****

In relation to the potential (G62-3)

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ६२ ॥

अभवसिद्धिय त्ति को भावो, पारिणामिओ भावो ॥ ६३ ॥

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिकोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ६२ ॥

अभव्यसिद्धिक यह कौनसा भाव है ? पारिणामिक भाव है ॥ ६३ ॥

#G62. Operationally, trend for realization of potential follows from the generalization for their state I through XIV.

#G63. What is the tendency behind unrealized potential? Unrealized expectations and unformulated thoughts lead to random and chaotic action.

*****

In relation to rationality (G64-88)

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ६४ ॥

खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, खइओ भावो ॥ ६५ ॥

खइयं सम्मत्तं ॥ ६६ ॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥ ६४ ॥

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? क्षायिक भाव है ॥ ६५ ॥

उक्त जीवोंके क्षायिक सम्यक्त्व होता है ॥ ६६ ॥

#G64. Operationally, trend for consistency follows from the generalization for their state IV through XIV.

#G65. What is the tendency of the lack of restraint? It is the tendency of random and chaotic actions and thoughts.

#G66. Loss of such lack of restraint amounts to rational consistency.

*****

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ६७ ॥

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो ॥ ६८ ॥

खइयं सम्मत्तं ॥ ६९ ॥

चदुण्हमुवसमा त्ति को भावो, ओवसमिओ भावो ॥ ७० ॥

खइयं सम्मत्तं ॥ ७१ ॥

चदुण्हं खवा सजोगिकेवली अजोगिकेवलि त्ति को भावो, खइओ भावो ॥ ७२ ॥

खइयं सम्मत्तं ॥ ७३ ॥

क्षायिकसम्यग्दृष्टिका असंयतत्व औदयिक भावसे है ॥ ६७ ॥

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत यह कौनसा भाव है ? क्षायोपशमिक भाव है ॥ ६८ ॥

उक्त जीवोंके सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥ ६९ ॥

अपूर्वकरण आदि चार गुणस्थानोंके क्षायिकसम्यग्दृष्टि उपशामक यह कौनसा भाव है ? औपशमिक भाव है ॥ ७० ॥

क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों उपशामकोंके सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥७१॥

क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों गुणस्थानोंके क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली यह कौनसा भाव है ? क्षायिक भाव है ॥ ७२ ॥

चारों क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवलीके सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥ ७३ ॥

#G67. Innate tendency for unrestrained behavior leads to lack of rationality.

#G68. What is such (undesirable) tendency of those in States V, VI and VII? Chaotic actions based on unrealistic expectations.

#G69. Loss of such tendencies amounts to rationality.

#G70. What is such (undesirable) tendency of the committed? It is the occasional lapse of rational consistency.

#G71. Loss of such tendency amounts to rationality.

#G72. What is the tendency of the dedicated in States XI through XIV? It is their total and consistent commitment to their goal.

#G73. Loss of irrationality inherent in the goal-directed rationality amounts to total rationality (related to all aspects of existence).

Insight: This is a remarkable analysis of the way acts become actions to facilitate efforts towards desired goal. Rational progress also requires progression and development in other areas to achieve consistency of thoughts, words and actions related to all aspects of existence.

*

वेदयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, खओव-समिओ भावो ॥ ७४ ॥

खओवसमियं सम्मत्तं ॥ ७५ ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ७६ ॥

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो ॥ ७७ ॥

खओवसमियं सम्मत्तं ॥ ७८ ॥

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है ? क्षायोपशमिक भाव है ॥ ७४ ॥

वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सम्यग्दर्शन क्षायोपशमिक होता है ॥ ७५ ॥

वेदकसम्यग्दृष्टिका असंयतत्व औदयिक भावसे है ॥ ७६ ॥

वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत यह कौनसा भाव है ? क्षायोपशमिकभाव है ॥ ७७ ॥

उक्त जीवोंके सम्यग्दर्शन क्षायोपशमिक होता है ॥ ७८ ॥

#G74. What is the (desirable but dormant) tendency among those in State IV? It is the tendency of occasional and chaotic expression of rationality.

#G75. Development of such tendency amounts to rationality.

#G76. Unexpressed or dormant rationality is due to lack of restraints.

#G77. What is the (desirable) tendency for those in States V, VI or VII? It is the tendency of chaotic consistency.

#G78. Development of such tendencies towards consistency amounts to rationality.

*

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो, उव-समिओ भावो ॥ ७९ ॥

उवसामियं सम्मत्तं ॥ ८० ॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ८१ ॥

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो ॥ ८२ ॥

उवसमियं सम्मत्तं ॥ ८३ ॥

चदुण्हमुवसमा त्ति को भावो, उवसमिओ भावो ॥ ८४ ॥

उवसमियं सम्मत्तं ॥ ८५ ॥

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ८६ ॥

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८७ ॥

मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८८ ॥

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है? औपशमिक भाव है ॥ ७९ ॥

उक्त जीवोंके सम्यग्दर्शन औपशमिक होता है ॥ ८० ॥

उपशमसम्यक्त्वी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवका असंयतत्व औदयिक भावसे है ॥ ८१ ॥

उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत यह कौनसा भाव है ? क्षायोपशमिक भाव है ॥ ८२ ॥

उक्त जीवोंके सम्यग्दर्शन औपशमिक होता है ॥ ८३ ॥

अपूर्वकरण आदि चार गुणस्थानोंके उपशमसम्यग्दृष्टि उपशामक यह कौनसा भाव है ? औपशमिक भाव है ॥ ८४ ॥

उक्त जीवोंके सम्यग्दर्शन औपशमिक होता है ॥ ८५ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि भाव ओघके समान है ॥ ८६ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि भाव ओघके समान है ॥ ८७ ॥

मिथ्यादृष्टि भाव ओघके समान है ॥ ८८ ॥

#G79. What is the (desirable) tendency behind the occasional consistency? It is the occasional expression of rationality.

#G80. Tendency for chaotic consistency amounts to rationality.

#G81. Occasional consistency is desirable for those with innate unrestrained behavior.

#G82. What is the (desirable) tendency behind the chaotic actions? It is the chaotic rationality.

#G83. Chaotic consistency amounts to rationality.

#G84. What is the (undesirable) tendency of those committed in States VIII to XI? It is the chaotic tendency (to over-commit).

#G85. Restraining the tendency to over-commit amounts to rationality.

#G86. Tendency for consistency among the disabled follows from the generalization for the State II, i.e. they lack ability to act with consistency.

#G87. Such tendency follows from the generalization for the State III, i.e. they are ignorant or indifferent towards rationality.

#G88. Tendencies of those in State I follow from the generalization for the State I, i.e. they are irrational with contradictory and belligerent tendencies.

*****

In relation to sensibility (G89-90).

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाय-वीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ ८९ ॥

असण्णि त्ति को भावो, ओदइओ भावो ॥ ९० ॥

संज्ञिमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतराग-छद्मस्थ तक भाव ओघके समान हैं ॥ ८९ ॥

असंज्ञी यह कौनसा भाव है ? औदयिक भाव है ॥ ९० ॥

#G89. Tendency towards consistently sensible actions follows from the generalization for States I through XII.

#G90. What is the tendency behind lack of sensibility? Innate lack of sensibility.

*****

In relation to the ability to internalize (G91-93)

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ९१ ॥

अणाहाराणं कम्मइयभंगो ॥ ९२ ॥

णवरि विसेसो, अजोगिकेवलि त्ति को भावो, खइओ भावो ॥ ९३ ॥

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली तक भाव ओघके समान हैं ॥ ९१ ॥

अनाहारक जीवोंके भाव कार्मणकाययोगियोंके समान हैं ॥ ९२ ॥

किन्तु विशेषता यह है कि अनाहारक अयोगिकेवली यह कौनसा भाव है? क्षायिक भाव है ॥ ९३ ॥

#G91. Operationally, tendency to internalize follows from the generalizations for States I through XIV.

#G92. Tendency of not-to-internalize follows from the transitional action-form.

#G93. In this context, what is the tendency of *ajogkevali*? It is because they have achieved rational consistency and consistent rationality.

*****